शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

जयद्रथ - वध

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

हाँ अप्सराएँ आप तुम पर मर रही होंगी वहाँ,
समता तुम्हारे रूप की त्रैलोक्य में रक्खी कहाँ!
पर प्राप्ति भी उनकी वहाँ भाती नहीं होगी तुम्हें!
क्या याद हम सबकी वहाँ आती नहीं होगी तुम्हें!

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि पाण्डवों और कौरवों के सेना के बीच भयंकर युद्ध चल रहा है। इसी क्रम में वीर अभिमन्यु युद्ध में मारा जाता है। जब मृत्यु की सूचना पाण्डवों के शिविर में पहुँचती है तो वहाँ की स्थिति काफी भावुक हो जाती है। अपने प्राण प्रिये के शव के पास बैठकर पूर्व में घटित एक-एक घटनाओं को याद करके नाना प्रकार से उत्तरा विलाप करती है। विलाप के क्रम में ही उत्तरा के मन में यह बात आती है कि शायद अभिमन्यु अपनी इतनी अधिक प्रशंसा सुन-सुनकर फूल गया ~~होगी~~ होगा और इसलिए वह अप्सराओं को प्राप्त करने की लालसा करता हुआ स्वर्ग चला गया है।

प्रस्तुत पद्यांश के द्वारा उत्तरा कहती है हे स्वामी अब तुम वहाँ पहुँच ही गये हो तो वे अप्सराएँ तुम्हारे रूप सौन्दर्य को देखकर अपने आप ही तुम पर अपने प्राण न्योछावर कर रही होंगी। क्योंकि तुम्हारी सुन्दरता की टक्कर लेने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं है। पर तुमको अपना सारा परिवार ही इतना अधिक प्रिय था कि उनको प्राप्त कर लेने के बाद भी उनकी प्राप्ति तुमको अच्छी नहीं लगती होगी। क्या तुमको हम सभी लोगों की याद नहीं आती होगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ

03/10/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्रीराम नरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग में 'मुनि' पथिक को कर्मवाद का पाठ पढ़ाते हुए उसे क्या सन्देश देना चाहता है? उस पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'पथिक' खण्ड काव्य के दूसरे सर्ग में मुनि पथिक को कर्मवाद का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि यह संसार भावभूमि नहीं है, कर्मभूमि है। सृष्टि के समस्त पदार्थ, चाहे जड़ हो चेतन सभी अपने-अपने काम में लगे हुए हैं। सबको अपनी-अपनी धुन सवार है। सभी किसी-न-किसी निश्चित लक्ष्य के पीछे दौड़ रहे हैं। एक उदाहरण देकर मुनि ने इस भाव को इस प्रकार स्पष्ट किया है- पेड़ की पत्तियाँ सदैव धूप-पानी सहती हैं, लेकिन कभी उफ तक नहीं करतीं और जीवन भर अपने आस-पास की पृथ्वी को छाया प्रदान करती रहती हैं। जब एक तुच्छ पत्ता अपने कर्त्तव्य के प्रति इतना सजग है, तो फिर मनुष्य ही क्यों निष्क्रिय रहे। तात्पर्य यह है कि तुम मनुष्य हो, अतः तुम्हें और भी सचेष्ट रहना चाहिए।

कवि ने जीवन के यथार्थ को मुनि के माध्यम से पलायनवादी पथिक को समझाने का प्रयास किया है। वैसे भी सार्वजनिक जीवन में 'कर्म' के बिना कोई मधुर फल प्राप्त नहीं होता है। कर्म ही जीवन है। संसार में समस्त जीव अपने कर्म के प्रति प्रयत्नशील है। मनुष्य तो सब जीवों में अधिक बुद्धिमान है। मनुष्य को विशेष रूप से अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट रहना चाहिए।

'मुनि' द्वारा पथिक को दिये गये सन्देश ने उसकी सोच को काफी प्रभावित किया और वह जीवन में कर्मवाद को श्रेष्ठ मानते हुए उसे आत्मसात कर लेता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

09/10/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० पत्र

दिगंत-भाग-2 पद्य भाग

शीर्षक - जन-जन का चेहरा एक

कवि - गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न :- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता में कवि कवि मुक्तिबोध ने सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व के विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एक समता दर्शाते हुए प्रभावशाली एवं मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक सी प्रवृत्ति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो, बिना भेदभाव किये प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में स्पष्ट मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अपने अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। यह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है। कवि प्रकृति के माध्यम से उनके चेहरे की झुर्रियों की तुलना गली में फैली हुई धूप से करता है। अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत जनता को बँधी हुई मुट्ठियों में दृढ़-संकल्प की अनुभूति कवि को हो रही है।

गोलाकार पृथ्वी के चतुर्दिक जन समुदाय का एक दल है। आकाश में एक भयानक सितारा चमक रहा है और उसका रंग लाल है। लाल रंग हिंसा, हत्या तथा प्रतिशोध की ओर संकेत कर रहा है, जो दमन, अशांति एवं निरंकुश पाशविकता का

शेष अगले

प्रतीक है। सारा संसार इससे त्रस्त है। यह दानवीय कुकृत्यों की अन्तहीन गाथा है। शेष आगे की कक्षा में-

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

09|10|20